eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

आधुनिक शिक्षा में अधिगम कौशल को बढ़ाना : रणनीतियाँ, चुनौतियाँ, प्रभाव और परिणाम

आकांक्षा सिंह[1] एवं डा0 राजेन्द्र बहादुर सिंह[2]
[1]शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग वी0एस0एस0डी0 कॉलेज, सी0एस0जे0एम0 विश्वविद्यालय कानपुर उ0प्र0
[2]असिस्टेन्ट प्रोफेसर – शिक्षाशास्त्र विभाग, वी0एस0एस0डी0 कॉलेज, नवाबगंज, कानपुर, उ0प्र0

Received: 20 July 2025 Accepted & Reviewed: 25 July 2025, Published: 31 July 2025

Abstract

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में छात्रों के अधिगम कौशल को बेहतर बनाना एक प्राथमिक आवश्यकता बन गई है। तकनीकी के प्रसार, शिक्षण विधियों में बदलाव और जीवन भर सीखनें की आवश्यकता ने इन कौशलों की अहमियत को बढ़ा दिया है। अधिगम कौशल जिन्हें ''सीखने के लिये सीखना'' भी कहा जाता है, आधुनिक शिक्षा में आवश्यक उपकरण है। जो छात्रों को ज्ञान प्राप्त करनें, उसे संसाधित करनें और प्रभावी ढ़ंग से लागू करनें में सहायता करते है। 21वीं सदी में जहा ज्ञान तेजी से फैल रहा है और निरन्तर विकसित हो रहा है, वहां मजबूत अधिगम कौशल विकसित करना अत्यंत आवश्यक हो गया है। यह शोधपत्र अधिगम कौशलों को बेहतर बनानें की रणनीतियों सामनें आने वाली चुनौतियों, उनके प्रभाव और इन पहलों के परिणामों की गहराई से जांच करता है। इसका का उद्वेश्य ऐसे विद्यार्थियों का निमार्ण करना है जो 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुसार सक्षम और आत्मनिर्भर हों।

मुख्य शब्द– आधुनिक शिक्षा, अधिगम कौशल, रणनीतियाँ, चुनौतियाँ, प्रभाव, परिणाम

Introduction

21वीं सदी की शिक्षा प्रणाली तेजी से बदल रही है। पांरपरिक रटनें वाली शिक्षा अब कौशल आधारित अधिगम की ओर बढ़ रही है। इसमें अधिगम कौशल यानी सोचनें, समझनें, सवांद करनें और समस्याऐं हल करनें जैसे गुणों पर जोर दिया जाता है। ये कौशल महत्वपूर्ण सोच, समस्या समाधान, आत्म–नियमन, समय प्रबन्ध, सहयोग और नई जानकारियों के अनुसार खुद को ढ़ालने की क्षमता को शामिल करते है। ये कौशल प्रतिस्पर्धात्मक और तेजी से बदलते परिवेश में दक्षता प्राप्त करनें के लिये आवश्यक हैं। इस शोध में हम इन कौशलों को विकसित करनें की रणनीतियों, उनसे जुड़ी चुनौतियों, उनके प्रभाव और प्राप्त होनें वाले परिणामों का अध्ययन करेंगे।

आधुनिक शिक्षा– आधुनिक शिक्षा का तात्पर्य उस शैक्षिक प्रणाली से है जो आज के समय की वैज्ञानिक, तकनीकी, सामाजिक और वैश्विक आवश्यकताओं के अनुरूप विद्यार्थियों को ज्ञान, कौशल एंव तकनीकी मूल्यों से सम्पन्न बनाती है। यह पारम्परिक शिक्षा से अलग होती है क्योंकी इसमें डिजिटल टूल्स, नवाचार, अनुसंधान एंव व्यवहारिक शिक्षा पर बल दिया जाता है। आधुनिक शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो विद्यार्थियों को समकालीन जीवन की चुनौतियों का सामना करनें हेतु वैज्ञानिक सोच, तकनीकी दक्षता, नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक जागरूकता से सम्पनन बनाती है। '' इसके लिये आवश्यक है कि विद्यार्थियों में अधिगम कौशलों का विकास किया जाये। अधिगम कौशल विद्यार्थियों को इन सभी चुनौतियों का सामना करने के लिये सक्षम बनाते है और साथ ही सिखनें के अवसर प्रदान करते है।

यूनेस्को के अनुसार–'' आधुनिक शिक्षा विद्यार्थियों को 21वीं सदी के कौशल जैसे कि आलोचनात्मक सोच, डिजिटल साक्षरता, सहयोग और जीवन भर सीखनें की क्षमता प्रदान करती है। ''

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

अधिगम कौशल– अधिगम कौशल से तात्पर्य उन क्षमताओं और योग्यताओं से है जो किसी व्यक्ति को प्रभावी ढ़ग से सिखनें, जानकारी समझने,समस्याओं का हल करने और नये ज्ञान को आत्मसात करने में सहायता करती है। ये कौशल शिक्षा, कार्य और जीवन के सभी क्षेत्रों में अत्यन्त आवश्यक होते है। " अधिगम कौशल वे मानसिक, सामाजिक और व्यवहारिक क्षमतायेंह" जो व्यक्ति को नई चीजें सीखने उन्हें समझने,लागू करने और अनुकूल स्थिति में प्रयोग करने योग्य बनाती है। "

मुख्य अधिगम कौशल

1. **आलोचनात्मक सोच**
2. **समस्या समाधन**
3. **संचार कौशल**
4. **सहयोग या समूह कार्य**
5. **आत्म–प्रेरणा**
6. **समय प्रबन्ध**
7. **डिजिटल साक्षरता**

ये सभी अधिगम कौशल विद्यार्थियों को 21वीं सदी में शिक्षा ग्रहण करने, आलोचनात्मकसोच उत्पन्न करने एंव अपनी समस्या का समाधान स्वंय विद्यार्थी को खोजने में उसकी मदद करते है। इन्हें आत्मसात करके ही विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षा ग्रहण करनें मे कोई कठिनाई का अनुभव नही करना पड़ता है।

अधिगम कौशल बढ़ाने की रणनीतियाँ

खोज आधारित और परियोजना आधारित अीधगम– छात्रों की समस्याएं हल करने और गहराई से सोचने में मदद करता है। खोज आधारित अधिगम वह शिक्षण पद्वति है जिसमें विद्यार्थी स्वंय प्रश्न पूछते है, समस्याओं की पहचान करते है और समाधान खोजने का प्रयास करते हैं।

उदाहरण : जैसे – " पानी का स्त्रोत कहा से आता है ? " इस प्रश्न पर बच्चे स्वंय खोज करते है, जानकारी इकटठा करते है, और निष्कर्ष तक पहुचते हैं। परियोजना आधारित अधिगम वह प्रक्रिया है जिसमें विद्यार्थी किसी वास्तविक जीवन से जुड़ी समस्या या विषय पर समूह में कार्य करते हुये एक विस्तृत परियोजना तैयार करते हैं। यह अधिगम व्यवहारिक, सहयोगात्मक और दीर्घकालिक होता है।

उदाहरण जैसे – " स्वच्छता अभियान " पर एक समूह द्वारा पोस्टर, रिपोर्ट, सर्वेक्षण और समाधान तैयार करना।

डिजिटल शिक्षा और तकनीकी उपकरणों का प्रयोग– डिजिटल शिक्षा और तकनीकी उपकरण ऐसे डिजिटल संसाधन है जिन्हें विशेष रूप से सीखने की प्रक्रिया के लिये विकसित किया गया है। इनमें इंटरैक्टिव वेबसाइट और प्लेटफार्म से लेकर शिक्षण ऐप्स और सॉफ्टवेयर, ई–बुक्स और डिजिटल पाठयपुस्तकें शामिल है। डिजिटल मीडिया का उपयोग सीखने को अधिक लचीला और कुशल बनाता है।

सहयोगात्मक अधिगम– समूह कार्य, चर्चा और साथी शिक्षण से टीम वर्क और संवाद कौशल बढ़ता है। एक दूसरे के साथ रहकर आसानी से सीखने के अवसर प्राप्त होते है।

फिलप्ड क्लासरूम और मिश्रित अधिगम– फिलप्ड क्लासरूम एक आधुनिक शिक्षण विधि है जिसमें पारंपरिक कक्षा की प्रक्रिया को उल्टा कर दिया जाता है। इसमें विद्यार्थी घर पर वीडियो, ऑडियो या डिजिटल सामग्री के माध्यम से पाठ को पहले से सीखते है और कक्षा में अभ्यास, चर्चा, और संदेह समाधान पर ध्यान दिया जाता है। मिश्रित अधिगम एक ऐसा शिक्षण मॉडल है जिसमें पारंपरिक कक्षा शिक्षण और ऑनलाइन अधिगम को एक साथ मिलाया जाता है। इसमें छात्र कभी – कभी स्कूल में शिक्षक के मार्गदर्शन मे सीखते हैं, और कभी – कभी घर पर अन्यत्र डिजिटल माध्यम से स्वंय अध्ययन करते है।

प्रमुख चुनौतिया

तकनीकी असमानता– सभी छात्रों को डिजिटल साधन उपलब्ध नही है। जिसकी वजह से छात्रों में सीखने के अवसर की कमी रहती है। उनकी अपेक्षा वह छात्र जिनके पास साधन उपलब्ध होते है
उन्हें नये – नये ज्ञान के अवसर प्राप्त होते है।

शिक्षक प्रशिक्षण की कमी– अधिकांश शिक्षकों को आधुनिक तरीको की जानकारी नही होती है जिसके कारण वह विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान करने में अक्षम है। इसके साथ ही वह स्वंय भी आधुनिक समाज के साथ ताल – मेल नही बना पाते है।

परीक्षा केन्द्रित प्रणाली– रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच को हतोत्साहित करती है। इसके अर्न्तगत छात्र सिर्फ एक सीमित पाठयक्रम के माध्यम से ज्ञान ग्रहण करता है। इससे वह अपनी तर्क शक्ति का विकास करने में अक्षम रह जाता है।

सख्त पाठयक्रम – यह नवाचार और व्यक्तिगत अधिगम में रूकावट डालता है। यह एक ऐसा पाठयक्रम होता है जिसमें विषय, समय – सारणी और शिक्षण पद्वति पहले से निर्धारित होती है और उसमें परिवर्तन की बहुत कम या कोई गुंजाइश नही होती है। इसमें विद्यार्थी नई बातों को सिखानें और नया ज्ञान अर्जित करनें में असमर्थ रहते हैं।

अधिगम कौशलों का प्रभाव

शैक्षणिक प्रदर्शन– अधिगम कौशल के प्रभाव से छात्रों के अंक और उनकी समझ में सुधार होता है। जिसका प्रभाव उनकी निजी गतिविधियों पर भी दिखाई देता है।

आत्मनिर्भरता – छात्र स्वंय अपने आप सीखते है, गतिविधियों को समझते है । जिससे उनका मानसिक, शारीरिक आदि विकास होता है एंव वह आत्मनिर्भर बनते है।

भावात्मक विकास – सहयोग एंव आत्मचिन्तन से विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ता है और वह किसी भी कार्य को रूचिपूर्वक कर पाते हैं।

शिक्षा में निरन्तरता – इससे वह छात्र जो अपनी शिक्षा बीच मे ही अधूरी छोड़ देते है या अपनी पढ़ाई बन्द कर देते है उनके प्रतिशत में कमी आती है। इससे ड्रॉपआउट दर में कमी आती है।

परिणाम

व्यक्तिगत स्तर– इसके अर्न्तगत विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की भावना का विकास होता है एंव वे किसी भी कार्य करनें या सीखने के लिये प्रेरित होते, इसके साथ ही वह अपनी सीखने की आदत मे भी सुधार लाते है।

संस्थान स्तर– सभी संस्थान बेहतर परिणाम प्रदान करते है। इसके साथ ही साथ शिक्षण के नये – नये तरीके भी अपनाते है। जिसमे विद्यार्थियों मे सीखने के प्रति रूचि उत्पन्न होती है और बीच में ही अपनी पढ़ाई छोड़ने का जो कार्य वह करते है उसे बन्द कर देते है। इससे ड्रॉपआउट दर में भी कमी आती है।

सामाजिक स्तर– अधिगमकर्ता आगे आने वाली नई चुनौतियों के लिये तैयार रहते है। वह पूर्णतयः कौशल युक्त होकर अपने कार्य को सामाजिक स्तर पर भी पूर्ण करते है। इससे उन्हें किसी भी भय की स्थिति का सामना नहीं करना पड़ता है।

सुझाव

1. आधुनिक शिक्षण तकनीकों के माध्यम से शिक्षकों को प्रशिक्षित करना चाहिये।
2. पाठयक्रम को लचीला अर्थात कौशल आधारित एंव रूचिकर बनाना चाहिये।
3. सभी को समान तकनीकी सुविधाएँ प्रदान करना चाहिये।
4. बदलाव उन्मुख मूल्यांकन अर्थात परिक्षा के बजाय प्रदर्शन आधारित मूल्यांकन पर जोर देना चाहिये।
5. अभिभावकों को भी पूर्ण सहभागिता देनी चाहिये अर्थात उन्हें अपने बच्चो को घर पर भी अधिगम को प्रोत्साहन देना चाहिये।

निष्कर्ष– अधिगम कौशल आधुनिक शिक्षा की रीढ़ है। इनकी मदद से छात्र सिर्फ पढ़ते ही नही है बल्कि खुद को जीवन की विविध चुनौतियों के लिये तैयार करते हैं, हालांकि इनको बढ़ावा देने में कई चुनौतिया है, लेकिन उपयुक्त रणनीतियों और सहयोग से सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए जा सकते है। अधिगम कौशल शैक्षणिक सफलता, व्यक्तिगत विकास और आजीवन सीखने के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ये विद्यार्थियों को आत्म – निर्देशित, चिंतनशील और ज्ञानवान बनाते है।

सन्दर्भ–

वाइगोत्सकी, एल. एस, समाज में मस्तिष्क का विकास – सामाजिक अधिगम सिद्धान्त का आधार, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1978, पृष्ठ क्रमांक 165,166 .1

ऋॉ,जी और डेनिसन, आर. एस, मेटाकॉग्निटिव जागरूकता का आकलन– समसमायिक शैक्षणिक मनोविज्ञान जर्नल, इलसेवीयर, प्रमुख अंतराष्ट्रीय प्रकाशकीय समूह,1994,पृष्ठ क्रमांक 460 – 475 .2

एंडरसन,एल. डब्ल्यू. और कैथवोल,डी आर, ब्लूम टैक्सोनॉमी का पुनरीक्षित संस्करण – अधिगम उद्देश्यों की योजना और मूल्यांकन, एडिसन वेस्ले लांगमैन, 2001, पृष्ठ क्रमांक 156,157 .3

जिम्मरमैन,बी.जे., एक आत्म – नियंत्रित शिक्षार्थी बनना: एक अवलोकन.सिद्धांत से व्यवहार में, 41 (2), 2002 पृष्ठ क्रमांक 64 – 70 .4

चेरिय, एल. विलिस एंव सुजान, एंल. मिएर्टशिन, सोच और सीखने के कौशल को बढ़ाने के लिये मानसिक उपकरण, 2005 पृष्ठ क्रमांक 249 – 254
https://doi.org/10.1145/1095714.1095772

गुप्ता, डॉ0 एस0पी0 एवं गुप्ता, डॉ0 अलका, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज, 2007, पृष्ठ क्रमांक 175,176 .6

कॉफील्ड,फैंक, एडवर्ड, शीला, फिनले, लैन, हॉजसन, एन, केन, स्पार्स, स्टीयर रिचर्ड, अधिगम, कौशल और समावेशन में सुधार. अनिवार्य शिक्षा के बाद नीति का प्रभाव, लंदन प्रकाशन, 2008, पृष्ठ क्रमांक 248 .7
https://doi.org/10.4324/978020.3928998
ट्रिलिंग, बी, एंव फाडेल, सी, 21वीं सदी के कौशलः आज के जीवन के लिये अधिगम, जोसी – बास प्रकाशन, यूएसए, 2009 .8
स्पिलर,डी एंव फर्ग्यूसन, पीबी, छात्रों के अधिगम कौशलों के विकास को बढ़ावा देने के लिये शिक्षण रणनीतियाँ, विकास इकाई वाइकाटो विश्वविद्यालय, 2011 .9
सिंह डा0 अरुण कुमार एवं बनारीदास, डॉ0 मोतीलाल मनोविज्ञान, समाज शास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ शारदा पुस्तक भवन प्रयागराज 2011, पृष्ठ क्रमांक 184,195 .10 यूजे,आर एंव यूजून,ए,शिक्षार्थियों के स्व – नियंत्रित और स्व – निर्देशित शिक्षण कौशल पर मिश्रित शिक्षण वातावरण का प्रभाव, यूरोपियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 2012 .11
74,877-886l doi: 10.12973/eu-jer.7.4:877 gS
हैडविन,ए. एफ एंव विन्ने, पी. एच, अधिगम की गुणवत्ता में वृद्वि, स्नातक छात्रों में सीखनें के कौशल को बढ़ावा देना, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस, 2012 पृष्ठ क्रमांक 99.12
फुलन, एम, ग्रेट टू एक्सिलेंटः ओंटारियो की शिक्षा नीति में अगला कदम सरकारी स्तर पर रणनीति, 2013 .13
विश्व आर्थिक मंच, भविष्य के स्कूलः शिक्षा के नये मॉडल, 2020 .14
https://www.weforum.org/reports/school-of-the-future
पैंग, एन. एस. के, कक्षा शिक्षण में अधिगम कौशल के लिये मूल्यांकन के कार्यान्वयन में शिक्षकों के चिन्तनशील अभ्यास, ईसीएनयू शिक्षा समीक्षा, 2020, 5 (3) पृष्ठ क्रमांक 470–490 .15
https://doi.org/10.1177/2096531120936290
यूनेस्को, हमारे भविष्य की पुनः कल्पनाः शिक्षा के लिये नया सामाजिक अनुबन्ध, 2021 .
16
https://unesdoc.unesco.org/ark:48223/pf0000379707
कैलन, जी. एल, डाविया रूबेनस्टीन,एल. एंव हाल्टरमैन, ए., चक्रीय स्व विनियमित कौशल विकसित करके प्रेरण बढ़ाना, सिद्धान्त व्यवहार में अधिगम, , 6, (1) 2021, पृष्ठ क्रमांक 62 – 74 . 17
https://doi.org/10.1080/00405841.2021.1932153
अवदिउ, इ., बेत्केशी, ए., एंव गोलपेनी बी., भविष्य के लिये कौशल – 21वीं सदी की शिक्षा को क्रियान्वित करना, बहुविषय विज्ञान जर्नल, 7, (1) 2024, .18
https://1031893/multiscienc.2025011